।। अर्हम् ।।

15 अप्रैल, 2008

चिकित्सा के जिस उद्देश्य से आए हैं, वह कार्य जयपुर में शुरु होने वाला है, इसलिए सन् 2008 का चतुर्मास जयपुर में करने का भाव है।

हमने ऐसा चिंतन किया है कि इस चतुर्मास के बाद हमारा मुख्य प्रवास केन्द्र जैन विश्व भारती, लाडनूं रहेगा। स्वास्थ्य की अनुकूलता के अनुसार जैन विश्व भारती से लगभग 100–150 किलोमीटर की परिधि में यात्रा या चतुर्मास हो सकेगा।

लाडनूं वालों की सन् 2010 के चतुर्मास की प्रबल प्रार्थना थी। देश, काल आदि की अनुकूलता के अनुसार सन् 2010 से एक वर्ष पहले सन् 2009 का चतुर्मास जैन विश्व भारती, लाडनूं में करने का भाव है।

दांतरी, राजस्थान **आचार्य महाप्रज्ञ**